Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II

(कला वर्ग)

भाग – 1

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 2 (कला वर्ग)

CONTENTS

हिन्दी

1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	4
3.	शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)	7
4.	हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण	10
5.	तत्सम – तद्भव	13
6.	देशज शब्द	15
7.	उपसर्ग	17
8.	प्रत्यय	20
9.	संधि	24
10.	समास	41
11.	संज्ञा	50
12.	सर्वनाम	55
13.	विशेषण	57
14.	क्रिया	58
15.	अव्यय/अविकारी शब्द	60
16.	पर्यायवाची	64
17.	विलोम शब्द	67
18.	वाक्य के लिए एक शब्द	75
19.	शब्द युग्म	81
20.	एकार्थी शब्द	92
21.	वर्तनी शुद्धि	99
22.	वाक्य भेद	103
23.	पद बंध	105

24.	पद परिचय	108
25.	वचन	111
26.	लिंग	114
27.	काल	119
28.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	122
29.	कारक एवं विभक्ति	126
30.	काव्य में भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, शिल्प सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	132
31.	राजस्थानी शब्दों के हिन्दी रूप	136
32.	राजस्थानी मुहावरे व लोकोक्तियाँ	145
33.	मुहावरे	155
34.	लोकोक्ति	165

हिन्दी भाषा शिक्षण

1.	हिन्दी शिक्षण	179
2.	हिन्दी शिक्षण विधि	184
3.	भाषा शिक्षण के उपागम	209
4.	भाषा दक्षता का विकास	212
5.	भाषा कौशल	215
6.	भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ	223
7.	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	225
8.	भाषा शिक्षण में आंकलन, मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण	231
9.	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	239
10.	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	242

लेवल ।। के हिन्दी भाषा-1 के प्रतियोगियों के लिए

भाषा-।

- वर्ण विचार
- स्त्रोत के आधार पर शब्दों के वर्ग- तत्सम/ तद्भव/देशज/विदेशी शब्द
- पर्यायवाची शब्द
- विलोम/विपरीतार्थक शब्द/प्रतिलोम
- एकार्थी शब्द
- उपसर्ग
- प्रत्यय
- संधि
- समास
- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण व विशेष्य
- अव्यय
- वाक्यांश के लिए एक शब्द
- लिंग, वचन एवं काल
- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्यों के प्रकार तथा पदबन्ध
- विराम चिह्न
- शब्द शुद्धि
- राजस्थानी शब्दों के हिंदी रूप
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
- भाषा शिक्षण की विधियाँ
- भाषा शिक्षण के उपागम
- भाषायी दक्षता का विकास
- भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना) का विकास तथा हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ
- शिक्षण अधिगम सामग्री - पाठ्यपुस्तक, बहुमाध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण
- समग्र एवं सतत् मूल्यांकन
- उपचारात्मक शिक्षण
- अपठित गद्यांश: शब्द ज्ञान- तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्द, पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, विशेष्य, अव्यय, वाक्यांश के लिए एक शब्द, शब्द शुद्धि।
- अपठित गद्यांशः रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल व लिंग ज्ञात करना, दिए गए शब्दों का वचन, काल और लिंग बदलना, राजस्थानी शब्दों के हिंदी रूप

लेवल ।। के हिन्दी भाषा-2 के प्रतियोगियों के लिए

भाषा-।।

- वर्ण विचार एवं शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखना
- स्त्रोत के आधार पर शब्दों के वर्ग- तत्सम/ तद्भव/देशज/विदेशी शब्द
- उपसर्ग
- प्रत्यय
- संधि
- समास
- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण
- अव्यय व क्रिया विशेषण
- लिंग, वचन एवं काल
- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्यों के भेद व पदबन्ध
- विराम चिह्न
- युग्म शब्द
- कारक चिह्न
- क्रिया
- वर्ण विश्लेषण
- शब्दों के मानक रूप
- राजस्थानी मुहावरों का अर्थ एवं प्रयोग
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
- भाषा शिक्षण की विधियाँ
- भाषा शिक्षण के उपागम
- भाषायी दक्षता का विकास
- भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना) का विकास तथा हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ
- शिक्षण अधिगम सामग्री पाठ्यपुस्तक, बहुमाध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना)
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण
- समग्र एवं सतत् मूल्यांकन
- उपचारात्मक शिक्षण
- अपठित गद्यांशः वर्ण विचार, वर्ण विश्लेषण, शब्द ज्ञान- तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्द, युग्म शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखना, शब्दों के मानकरूप लिखना, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन एवं काल
- अपठित पद्यांशः भाव सौंदर्य, विचार सौंदर्य, नाद सौंदर्य, शिल्प सौंदर्य, जीवन दृष्टि

हिन्दी

संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
  जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

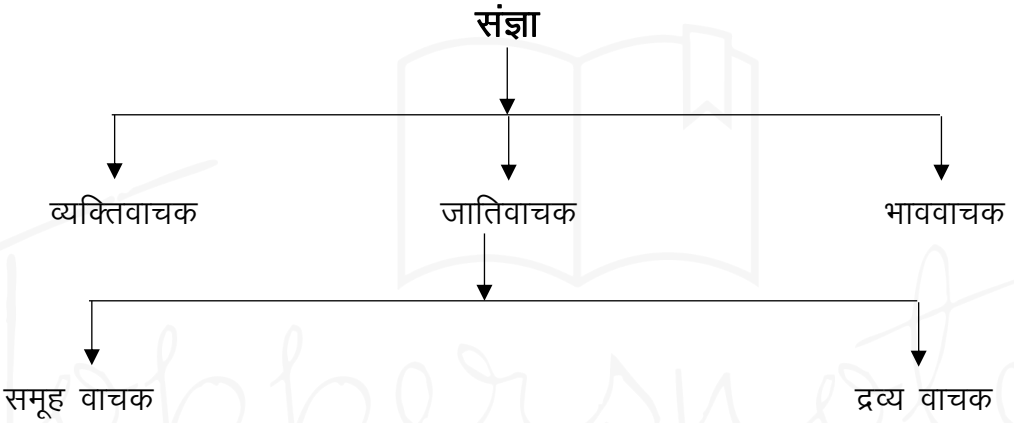

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. **भाववाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   - प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
   - भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
     1. जातिवाचक संज्ञा से
     2. सर्वनाम से
     3. विशेषण से
     4. क्रिया से
     5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरतर
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
खेलना	खेल
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, धी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, आक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।

सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।

जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों

हिन्दी भाषा शिक्षण

भाषा कौशल

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भाषा सीखने का सही क्रम –

1.	सुनना	(सु)	L – Listening
2.	बोलना	(बो)	S – Speaking
3.	पढ़ना	(प)	R – Reading
4.	लिखना	(लि)	W – Writing

डॉ. मेरिया मॉण्टेसरी ने भाषा सीखने का सही क्रम इस प्रकार प्रस्तुत किया –

1.	सुनना	(सु)	L – Listening
2.	बोलना	(बो)	S – Speaking
3.	लिखना	(लि)	W – Writing
4.	पढ़ना	(प)	R – Reading

1. श्रवण कौशल (सुनना)

श्रवण कौशल एक महत्वपूर्ण कौशल है जो शिशु जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है। मनुष्य अपने ज्ञान का अधिकांश भाग श्रवण कौशल से अर्जित करता है।

- मनुष्य अपने भाषा व्यवहार का लगभग – 45% सुनने में उपयोग करता है।
- भाषा शिक्षण के संदर्भ में श्रवण का अर्थ – सुनकर भाव ग्रहण करना।
- श्रवण कौशल में किसी कथन को ध्यान–पूर्वक सुनकर सुनी हुई बात को चिन्तन व मनन करने तथा अपना मन्तव्य स्थिर करने और उसके अनुसार आचरण या व्यवहार की प्रक्रिया सम्मिलित है।
- श्रवण कौशल का अर्थ – बालक में ऐसी क्षमता विकसित करना जिससे वह किसी कथन को ध्यान से सुन सके। सुनी हुई बात पर चिन्तन व मनन कर सके और उचित निर्णय ले सके।

श्रवण कौशल का महत्व

1. श्रवण में कुशलता से बालक अन्य के विचारों को सरलता व शीघ्रता से ग्रहण कर सकता है।
2. श्रवण कौशल से ही बालक उच्चारण व अनुकरण करना सीखता है।
3. इससे बालक शुद्ध व अशुद्ध ध्वनियों शब्दों के उच्चारण में भेद कर सके।
4. संचार माध्यमों पर प्रस्तुत समाचारों व संवादों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा।
5. सुनी हुई विषय वस्तु के आधार पर शिष्टाचार पूर्वक प्रश्न पूछ सकेगा व अपनी शंका का समाधान कर सकेगा।

श्रवण कौशल के समय सावधानियाँ

1. श्रोता के बैठने की स्थिति उपयुक्त होनी चाहिए।
2. श्रोता को वक्ता की ओर मुँह करके बैठना चाहिए।
3. सुनते समय कोई अन्य कार्य जैसे – पढ़ना, वार्तालाप आदि नहीं करना चाहिए।
4. वक्ता के विचारों के समय सहमती जताते हुए हाँ, हूँ शब्दों का प्रयोग करना।
5. मनोयोगपूर्वक, धैर्यपूर्वक ध्यान केन्द्रीत करके सुनना चाहिए, श्रोता को श्रवण में ही दत्तचित होना चाहिए मुख मुद्रा प्रसन्न होनी चाहिए।

श्रवण कौशल के प्रकार

1. अवधानात्मक
2. रसात्मक
3. विश्लेषणात्मक

1. **अवधानात्मक** – श्रुत सामग्री को ध्यान–पूर्वक सुनकर उसके मुख्य तथ्यों विचारों आदेशों–निर्देशों को ग्रहण करना।
2. **रसात्मक** – उचित लय–ताल, आरोह, अवरोह तथा स्वराघात, भाव–भंगिमा आदि रसानुभूति करना।
3. **रसात्मक** – श्रुत सामग्री में प्रस्तुत विचारों भावों आदि पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार मंथन करना।

श्रवण कौशल के विकास के अवसर

1. **कक्षा–शिक्षण के दौरान** – कहानी, बातचीत, बालगीत, कथन को विभिन्न मनोभावों में व्यक्त करना।
2. **सहशैक्षिक क्रियाओं के दौरान** – वाद–विवाद, कहानी, प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, आशु भाषण, कविता वाचन प्रतियोगिता आदि द्वारा।
3. **कक्षांतर कार्यकलापों के दौरान** – आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि।

श्रवण दोष के निराकरण के उपाय

1. कम सुनाई देने वाले बच्चों को अग्रिम पंक्तियों में बैठाना।
2. वक्ता सुस्पष्ट व उच्च आवाज में बोलना चाहिए।
3. मंत्रों का प्रयोग करके श्रवण कौशल दिया जा सकता है।

2. उच्चारण कौशल

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल

कथन कौशल

- भाषा में व्याकरण को छोड़ कर शुद्ध उच्चारण का महत्व है।
- यह एक उत्पादक कौशल है जिसमें वागिन्द्रियाँ सम्मिलित हैं।
- व्याख्यान, वार्तालाप, प्रवचन आदि उच्चारण के रूप हैं।
- पाणिनी के अनुसार स्वरों व वर्णों के अशुद्ध उच्चारण से मंत्र का अर्थ – अनर्थ हो जाता है।
- उच्चारण शिक्षण भाषा ज्ञान का आवश्यक अंग है।
- शुद्ध उच्चारण द्वारा भावाभिव्यक्ति उपयुक्त होती है। शुद्ध उच्चारण से भाषा का परिष्कार होता है।

उद्देश्य

1. इससे विद्यार्थी शुद्ध, स्पष्ट, स्वभाविक एवं प्रवाह युक्त वाणी में वार्तालाप एवं भाषण करने की क्षमता अर्जित कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी भावानुकूल, अवसरायुक्त, उचित भाषा–शैली तथा हाव–भाव को व्यक्त कर सकेंगे।
3. अपने मनोभावों को स्वाभाविक एवं भावानुरूप ढंग से अभिव्यक्त कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी भावनुकूल आरोह, अवरोह बल और अनुत्रान का ध्यान रखते हुए मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
5. वार्तालाप, परिचर्चाओं में भाग ले सकेंगे।
6. स्वागत, परिचय, धन्यवाद, कृतज्ञता, संवेदना, बधाई आदि मनोभावों के लिए उपयुक्त भाषा का प्रयोग।
7. विचारभिव्यक्ति के दौरान असहमति होने पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकेंगे।

मौखिक अभिव्यक्ति के रूप

1. औपचारिक – (अ) साहित्यिक (ब) व्यावहारिक
2. अनौपचारिक – घर, परिवार आदि की जाने वाली बातचीत

मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ

1. उच्चारण की शुद्धता
2. स्वभाविकता व स्पष्टता
3. विचार क्रमबद्धता
4. सशक्ता
5. प्रवाह
6. अवसरानुकूल

मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का माध्यम

1. अनौपचारिक बातचीत
2. कहानी कथन
3. घटना वर्णन
4. चित्र वर्णन
5. भाषण
6. संवाद एकांकी, नाटक
7. आशुभाषण, वाद–विवाद, बालसभा

मौखिक अभिव्यक्ति से संबंधित त्रुटियाँ

1. अधिक या न्यून गति।
2. ध्वनियों, शब्दों का गलत उच्चारण व यथास्थान बलाघात न होना।
3. उचित स्थान पर विराम न देना तथा व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करना।
4. शब्दों का गलत प्रसंग में प्रयोग करना।
5. प्रवाह तथा ओजस्विता में कमी होना।
6. मनोवैज्ञानिक दोष।

निराकरण

1. उच्चारण अवयवों की जाँच।
2. शैक्षिक निर्देशन व सहायता कार्यक्रम।
3. सुनियोजित शैक्षिक क्रियाकलापों का विद्यालय स्तर पर आयोजन।
4. अभिनव प्रयोगों से संबंधित उपचारात्मक शिक्षण।

दोषों के कारण

1. शारीरिक प्रभाव।
2. मानसिक प्रभाव।
3. भौगोलिक प्रभाव।
4. सामाजिक प्रभाव।
5. अज्ञानता व असावधानी।
6. शीघ्र प्रयत्न, प्रयत्न लाघव।
7. अध्यापक द्वारा अशुद्ध उच्चारण।

3. पठन कौशल/वाचन कौशल

1. पठन या वाचन एक सोद्देश्य, सार्थक, चिन्तन प्रधान प्रक्रिया है।
2. पठन में दक्ष व्यक्ति ही लिखित ज्ञान भण्डार का उपयोग कर सकता है।
3. पठन एक बहुआयामी जटिल प्रक्रिया है जिसमें लिपि–चिन्हों की पहचान एवं उनके उच्चारण की कुशलता के साथ–साथ पठित सामग्री के अर्थग्रहण एवं उसका पूर्ण रूप से समझ लेने की योग्यता का समावेश।

पठन कौशल के सोपान

1. प्रत्ययाभिज्ञान
2. अर्थग्रहण
3. मूल्यांकन एवं प्रतिक्रिया
4. अनुप्रयोग

पठन कौशल के प्रकार

(अ) सस्वर पठन कौशल (वाचन)

1. आदर्श वाचन – शिक्षक द्वारा
2. अनुकरण वाचन – बच्चों द्वारा
3. समवेत वाचन – शिक्षक व बच्चों दोनों द्वारा

(ब) मौन पठन कौशल (वाचन)

1. द्रुत पठन वाचन – जल्दी–जल्दी किया जाता है।
2. गंभीर पठन वाचन – ध्यानपूर्वक धीरे–धीरे किया जाता है।

पठन कौशल के उद्देश्य

1. छात्रों को शब्दों ध्वनियों व उच्चारण का उचित ज्ञान करवाना।
2. उच्चारणगत त्रुटियों को सुधारना।
3. विराम, लय, आरोह, अवरोह, आदि का ज्ञान करवाना।
4. अर्थ पर ध्यान देते हुए प्रभावशाली ढंग से वाचन करना।
5. शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
6. पठन में रूचि जाग्रत कर छात्रों को स्वाध्याय की ओर उन्मुख करना।

पठन संबंधी त्रुटियाँ व उपाय

1. अशुद्ध उच्चारण करना।
2. उपयुक्त बलाघात न होना।
3. विराम चिन्हों का गलत प्रयोग करना।
4. पठन में आरोह, अवरोह का अभाव।

4. लेखन कौशल

- लेखन कौशल से बच्चे की अधिगम क्षमता का विकास होता है।
- लेखन एक कला है जो दो चरणों में सम्पन्न होती है।
  1. **प्रथम चरण –** भाषा की ध्वनियों को लिपिबद्ध करके शुद्ध सुपाठ्य एवं सुन्दर रूप में प्रस्तुत करने की कुशलता प्राप्त की जाती है।
  2. **दूसरे चरण –** लिपि प्रतीकों के माध्यम से अपने भावों विचारों की सुस्पष्टता अर्थपूर्ण एवं प्रभावी अभिव्यक्ति की योग्यता सम्मिलित है।

लेखन कौशल से विद्यार्थी में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन

1. विद्यार्थी सुलेख के पाँच तत्व – स्वच्छता, स्पष्टता, बनावट, सिरोरेखा, गति का सही प्रयोग कर सकेगा।
2. विराम चिह्नों व व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
3. सन्दर्भ अनुसार मुहावरों, लोकोक्तियों, वाक्यों, वाक्यांशों आदि का अर्थानुकूल प्रयोग कर सकेगा।
4. लिखित अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता, एकता व सुसंबद्धता बनाए रख सकेगा।

लेखन कौशल के प्रकार

1. सुलेख – सुंदर लिखना।
2. अनुलेख – अध्यापक का अनुकरण करके लिखना।
3. श्रुतिलेख – सुनकर लिखना।
4. प्रतिलेख – किताब में देखकर लिखना।

लेखन कौशल की विधियाँ

1. खण्डरा लेखन विधि
2. रूपरेखा विधि
3. अनुलेखन विधि
4. तुलना विधि – यह विधि द्वितीय भाषा सिखाने के लिए उपयुक्त है इसमें विद्यार्थी को द्वितीय भाषा के वर्ण पहले सीखाए जाते हैं। जिनकी संरचना, मातृभाषा के वर्णों से मिलती है।

लेखन के तत्व

1. शब्दों का सही प्रयोग।
2. वाक्य रचना।
3. तथ्यों का तार्किक प्रस्तुतीकरण
4. वर्तनी

लेखन के दोष

1. लेखन सिखाने में उचित विधि न अपनाना।
2. अपरिपक्व अवस्था में लिखना सिखाना।
3. उचित लेखन सामग्री का अभाव।
4. सुलेख का अभ्यास नहीं करवाना।
5. लिपि की अनभिज्ञता।
6. क्षेत्रीय भिन्नता।

निराकरण के उपाय

1. उचित अवस्था में ही लेखन करवाया जाए।
2. बालक के व्यक्तित्व का सम्मान।
3. उचित लेखन विधियों का प्रयोग।
4. उच्चारण अभ्यास।
5. श्रुत लेखन का अभ्यास।
6. अशुद्धि कोष का निर्माण करना।

शिक्षण के अन्य कौशल

1. प्रस्तावना कौशल
2. प्रश्नोत्तर कौशल
3. श्यामपट्ट कौशल

प्रस्तावना कौशल

- इसका उद्देश्य पूर्व ज्ञान और पूर्व अर्जित कौशलों के आधार पर शिक्षण उद्देश्यों में स्पष्टता लाना है।

प्रमुख तत्व –

1. अवधान केन्द्रित करना
2. प्रेरित करना
3. सम्बन्धित पाठ की संरचना व निर्माण

प्रस्तावना कौशल के घटक

1. प्रश्न पूर्व ज्ञान पर आधारित होने चाहिए।
2. प्रश्न पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने वाले होने चाहिए।
3. प्रश्न सरल से कठिन की ओर होने चाहिए।
4. प्रश्न एकांकी होने चाहिए।
5. प्रश्न प्रकरण से सम्बन्धी होने चाहिए।

प्रस्तावना कौशल के प्राप्त उद्देश्य

- यदि इस शिक्षण कौशल का सही उपयोग किया जाये तो शिक्षक निम्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

1. छात्रों में प्रेरणा का जागरण और निरंतरता बनाये रखना।
2. ध्यान केन्द्रित कर छात्रों को नवीन अधिगम देना।
3. सम्बन्धित क्रियाओं को प्रारम्भ करने हेतु विधिवत साधनों का प्रयोग करना।
4. प्रस्तावना के द्वारा ज्ञात से अज्ञात की ओर सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

प्रश्नोत्तर कौशल

- शिक्षण को प्रभावशाली एवं सफल बनाने के लिए प्रश्नोत्तर एक महत्वपूर्ण कौशल है जिसमें पारंगत होना सभी शिक्षकों के लिए अनिवार्य है। जिसको निम्न प्रकार समझा जा सकता हैं –

प्रश्नों की संरचना –

- प्रश्नों की संरचना से तात्पर्य प्रश्न की रचना या प्रश्न बनाने से है। जिसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
- जिसके अंतर्गत प्रश्नों का प्रकार, उसकी भाषा, विषयवस्तु से प्रश्नों का सम्बन्ध एवं प्रश्नों के स्तर का अध्ययन सम्मिलित है।

कक्षा में प्रश्न पूछना –

- कक्षा में प्रश्न पूछना एक कला है, जिसका सम्बन्ध सम्प्रेषण से होता है।
- प्रश्न पूछने की गति, शिक्षक की आवाज तथा कब किससे किस स्तर का प्रश्न पूछा जाए यह शिक्षक के विवेक को दर्शाता है।

प्रश्नोत्तर कौशल में प्रश्नों की भूमिका

- शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक छात्रों से प्रायः प्रश्न पूछता है। शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रश्न पूछने के अनेक प्रयोजन है शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से छात्रों को अधिगम के लिए प्रेरित करता है। कभी–कभी वह यह जाँच भी करता है कि छात्र विषयवस्तु को समझ रहे है या नहीं।
- कभी वह प्रश्नों के माध्यम से पुरावर्ती करता है। उपर्युक्त से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रश्न शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

प्रश्नोत्तर कौशल में प्रश्नों की संरचना सम्बन्धी घटक

सम्बद्धता –

- प्रश्न बनाते समय इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए।
- प्रश्न बनाते समय कि प्रश्न पढ़ाये जाने वाली विषय वस्तु से सम्बन्धित हो।

संक्षिप्त एवं सटीक –

- संक्षिप्त एवं सटीक से तात्पर्य प्रश्नों की लम्बाई से है।
- प्रश्न संक्षिप्त एवं बिंदु निर्देशित हो क्योंकि अधिक बड़े प्रश्न छात्रों को जल्दी से समझ नहीं आते हैं। ये प्रश्न समय को नष्ट करते हैं।

स्पष्टता–

- स्पष्टता का तात्पर्य प्रश्नों की भाषा से है। प्रश्न की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि छात्र उसे समझ सके।
- इस प्रकार के प्रश्न जिज्ञासा उत्पन्न करने में सहायक होते हैं और छात्रों के चिन्तन को बढ़ावा देते हैं यदि प्रश्नों की भाषा जटिल होगी तो छात्र प्रश्न समझने में कठिनाई अनुभव करेंगे।

श्यामपट्ट कौशल –

- सबसे अधिक उपयुक्त कौशल है। यह छात्र और शिक्षक दोनों के लिए लाभदायक है यह शिक्षक के लिए विषयवस्तु को समझाने में तथा छात्रों के लिए विषयवस्तु को बोधगम्य बनाने में सक्रिय भूमिका निभाता है।

श्यामपट्ट कौशल के प्रमुख घटक –

लेख की स्पष्टता –

- इसके अन्तर्गत अध्यापक को स्पष्ट शब्दों को उपयुक्त आकार और सीधी लाइन में लिखना चाहिए तथा प्रकरण को गहरे काले अक्षरों में या बड़े अक्षरों में लिखना चाहिए।

श्यामपट्ट कार्य में स्वच्छता –

- इसके अन्तर्गत दो रेखाओं के मध्य अन्तराल सीधी रेखाएँ व समान्तर वाक्य विन्यास आते हैं।

श्यामपट्ट कार्य की उपयोगिता –

- इसमें मुख्य बिन्दुओं व शब्दों का रेखांकन, उपयुक्त रेखा चित्र आदि आते हैं।
- श्यामपट्ट को ऊपर से नीचे की ओर साफ करना चाहिए।

श्यामपट्ट कौशल के उद्देश्य

यदि एक शिक्षक इस कौशल को प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करे तो निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति संभव है–

1. कक्षा में पढ़ाये जाने वाले प्रत्यय का स्पष्ट अवबोध।
2. शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से पढ़ायी गई पाठ्यवस्तु का पुनर्बलन
3. कक्षा में बालकों के अवधान का जाग्रत करना और उसकी निरंतरता बनाये रखना।

श्यामपट्ट कौशल का शिक्षण में उपयोग

1. शिक्षण में मुख्य भूमिका होती है यह सबसे सस्ता, सर्वत्र उपलब्ध साधन है।
2. दृश्य साधन के रूप में।
3. सम्प्रेषण को प्रभावी बनाने में।
4. छात्रों की सक्रियता बढाने में।
5. समय व श्रम की बचत।
6. अवधान के केन्द्रीकरण में।
7. विविधता उत्पन्न करने में।